iJRASET
International Journal For Research in
Applied Science and Engineering Technology

INTERNATIONAL JOURNAL FOR RESEARCH

IN APPLIED SCIENCE & ENGINEERING TECHNOLOGY

Volume: 12 **Issue:** III **Month of publication:** March 2024

DOI: https://doi.org/10.22214/ijraset.2024.58553

www.ijraset.com

Call: 08813907089 | E-mail ID: ijraset@gmail.com

International Journal for Research in Applied Science & Engineering Technology (IJRASET)
ISSN: 2321-9653; IC Value: 45.98; SJ Impact Factor: 7.538
Volume 12 Issue III Mar 2024- Available at www.ijraset.com

भारतीय समाज में सामाजिक समरसता के अवरोधक

डॉ-रोहन प्रकाश दुनरया
सहायक प्राध्यापक एंव विभागाध्यक्ष - समाजशास्त्र, शा. श्याम लाल पाण्डवीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय मुरार ग्वालियर, जिला- ग्वालियर (म.प्र.)

सारः सामाजिक समरसता का संक्षेप अर्थ है सामाजिक समानता तथा इसका व्यापक अर्थ है जातिगत भेदभाव एवं अस्पृश्यता का जड़ मूल से उन्मूलन कर लोगों में परस्पर सामाजिक प्रेम एवं सौहार्द बढ़ाना तथा समाज के सभी वर्गों के मध्य सामाजिक एकता स्थापित करना यह एक ऐसा विषय है जिसकी चर्चा करना एवं इसे सही ढंग से क्रियान्वित करना आज भारतीय समाज एवं राष्ट्र की मूलभूत आवश्यकता बन गया है किंतु प्राचीन काल से ही सामाजिक समरसता में अनेक रोड़े आते रहे हैं और आज भी विचार यही है कि आज 21वी शदी में भी यह बदलाव की नई राह पर चलते भारत को सामाजिक समरसता के अपने लक्ष्य प्राप्ति में आगे नहीं बढ़ने दे रहे हैं जबकि हम विश्व को नए बदलते भारत का दर्शन कराते है परन्तु हमारी सामाजिक जडें आज सामाजिक समरसता मे अवरोधक बनी हुई खडी है और सामाजिक समरसता के यह अवरोधक बहुआयामी में रूप में हमें समाज मे दिखाई देते हैं जो हमारी सामाजिक पहचान बन गई जो कि निम्न है

I. जातिवाद

काका कालेलकर के अनुसार- जातिवाद एक ऐसी आंधी तथा सर्वोच्च समूह भक्ति है जो न्याय औचित्य समानता तथा भाईचारे के स्वास्थ्य सामाजिक मानदंडों की उपेक्षा करती है इसी प्रकार पदानुक्रम इस श्रेणी से निकला सामाजिक असमानता, सजातीय विवाह, खानपान पर प्रतिबंध, जीवनसाथी के चुनाव में स्वतंत्रता का आभाव यही जाति व्यवस्था के प्रमुख लक्षण है इस प्रकार से हम कह सकते हैं कि उपरोक्त लक्षण जाति के प्रमुख अंग हैं जिन्होंने दलितों का युगों युग से शोषण किया अनेक भारतीय विद्वान जाति को समाज के सिर का ताज मानते हैं डॉक्टर भीमराव अंबेडकर बड़े दुख एवं खेद के साथ कहते हैं कि भारत में जाति प्रथा के समर्थक मौजूद हैं और इसका समर्थन इस आधार पर करते हैं कि जाति प्रथा श्रम के विभाजन का ही दूसरा नाम है यह वही जाति व्यवस्था है जिसने मानव को मंदिर एवं सार्वजनिक स्थानों पर प्रवेश निषेध पदचिन्ह मिटाने हेतु कमर में झाड़ू बांधना शिक्षा का विकास से कोसों दूर एवं मनुष्य दलित को मानव नामांकन एक बिजूका बना दिया प्रारंभ में यह केवल चार वर्ण व्यवस्था के रूप मे समाज मे थे किंतु अवसरवादी लोगों ने जाति का आधार कर्म को मानकर हजारों की संख्या में जातियां बना डाली एवं कर्म की जगह जन्म को आधार बना डाला जाति ने हिंदू समाज को रूग्ण निर्जीव व अनैतिक बना दिया है जाति के कारण ही हिंदुओं का जीवन निरंतर पराभव का जीवन रहा है भारतीय संविधान में दलितों को दिए विशेष अधिकारों एवं उनकी रक्षा के लिए बनाए गए अन्य कानूनों के बावजूद दलित उत्पीड़न कम होने की बजाय बढ़ ही रहा है दलित मानवाधिकार अभियान द्वारा जारी ब्लैक पेपर में इस हकीकत को पूरी तरह उजागर किया गया है आजादी के 70 साल से अधिक होने के बाद भी आज भी हम रोज किसी ना किसी रूप में दलितों पर हो रहे अत्याचार को देखते हैं आज भी प्रतिदिन दलितों की हत्या की जाती है महिलाएं बलात्कार की शिकार होती हैं दलितों के घरों को जला दिया जाता है एवं दलितों पर गंभीर हमले या मारपीट की जाती है संविधान में दी गई गारंटी को पूरा न करने के कारण आज भी 45% दलित समाज गरीबी रेखा के नीचे है देश की असाधारण प्रगति के दावों के बावजूद अभी भी 92% दलित परिवारों के घरों में शौचालय नहीं है

70% के घरों में बिजली नहीं हैं तथा 20% दलितों के घर में पेयजल जैसी आधारभूत सुविधाएं उपलब्ध नहीं है 21वीं सदी के लोकतंत्र का यह दुर्भाग्य ही है कि मनुष्य के मन में छुप कर बैठे मनु को नहीं लगा सका हमने सिद्धांतों में बड़ी-बड़ी बातें कर ली वह पर व्यवहार में दलितों को सामाजिक राजनीतिक धार्मिक या फिर शैक्षणिक जैसी बराबरी का दर्जा नहीं दे सके और और उच्च वर्ग की जातियों को यह समानता की बात करना खलता है दलितों को मिले आरक्षण के खिलाफ माहौल बनाया जाता है और बनाया जा रहा है राजनीति से लेकर सामाजिक सांस्कृतिक माध्यमों द्वारा आरक्षण को विकास की राह में रोड़ा समझ कर प्रचारित किया जा रहा है

अभी हाली के कुछ बरसों में मध्य प्रदेश सरकार ने जागरूकता हेतु कई प्रयास किए परंतु स्थिति जैसी की वैसी बनी हुई है मध्य प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने समाज में सामाजिक समरसता स्थापित करने हेतु दलितों को पुरोहित बनाने की घोषणा की थी जिसका राष्ट्रीय ब्राह्मण महासंघ ने विरोध किया परिणाम स्वरुप घोषणा का क्रियान्वयन ना हो सका तथा अभी हाल ही में हुए रीवा कांड को कौन भूल सकता है जो जातिवाद का एक अत्यंत ज्वलनशील उदाहरण है परंतु यह तो एक उदाहरण ही है ऐसे उदाहरणो की वानगी इस भारतीय समाज में भरी पड़ी है जो की सामाजिक समरसता के लिए हमेशा अवरोध बनी रही

International Journal for Research in Applied Science & Engineering Technology (IJRASET)
ISSN: 2321-9653; IC Value: 45.98; SJ Impact Factor: 7.538
Volume 12 Issue III Mar 2024- Available at www.ijraset.com

II. लिंग भेद

भारतीय समाज में नारी की स्थिति अत्यंत दयनीय विचार नियम है बाल विवाह प्रथा, सती प्रथा, शिक्षा से दूरी बहू पत्नी विवाह, पुरुष का नारी पर पूर्ण नियंत्रण सामाजिक असमानता लैंगिक भेदभाव महिलाओं की पराधीनता संयुक्त परिवार प्रणाली आदि ने नारी की दशा एवं दिशा को नकारात्मक प्रभावित किया उसे बचपन में पिता के संरक्षण में युवावस्था में पति के संरक्षण में एवं वृद्धावस्था में पुत्र के संरक्षण में रहने की सीख धर्मशास्त्र में दी शिक्षा ग्रहण करने एवं उसे संपत्ति का कोई अधिकार प्रदान नहीं किया गया सामान्यता महिलाओं का उपयोग एक वस्तु की तरह किया था किया जाता रहा है यह धारणा थी कि नारी का जन्म पुरुषों की सेवा हेतु हुआ है वर्तमान समय में अपने पुराने विचारों रीति-रिवाजों मैं बंध कर आज भी उन्हीं ख्यालों में जीवन जिया जा रहा है भारतीय महिला आज भी आर्थिक रूप से पुरुष के प्रभुत्व से मुक्त नहीं है सामाजिक नेतृत्व मनोवैज्ञानिक आयामों में भी उसकी स्थिति पुरुषों के समरूप नहीं है जब भी पूर्ण जीवन प्रारंभ करती है तब उसका अतीत वैसा नहीं होता जैसा पुरुष का होता है समाज के द्वारा उसका मूल्यांकन बिल्कुल निम्न परिपेक्ष में होता है एक बड़ी संख्या में महिलाएं मुक्ति प्राप्त करने में असफल रही हैं क्योंकि वह परंपरागत नारी जगत के नियमों से बाहर नहीं निकल पाई उन्हें ना तो समाज से ही और ना ही अपने परिवार से या परिवार के पुरुषों के सामान होने के लिए आवश्यक सहायता प्राप्त होती है निसंदेह आज भी पुरुषों के अत्याचारों का वह शिकार है तृप्ति देसाई के अनुसार स्वतंत्रता हासिल होने के 65 साल हो गए लेकिन खेद है कि स्त्री पुरुष समानता के लिए मुझे लड़ाई लड़नी पड़ रही है कि समानता के अधिकार के लिए लड़ना क्या गुनाह है पिछले साल की बात है मैंने सुना कि 29 नवंबर को शनि शिंगणापुर के शनि मंदिर में एक युवती चबूतरे पर जाकर दर्शन करने गई इसके बाद वहां के पुजारी ने अभिषेक करके वह जगह शुद्ध कि यह सुनकर मुझे बहुत गुस्सा आया यदि महिला स्पष्ट से कोई जगह अपवित्र होती है तो वह महिलाओं पर बहुत बड़ा अन्याय है महिला के स्पर्श से अशुद्ध कैसे हो सकती है क्या मैं अशुद्ध हूं फिर हमने सनी सिगनापुर नाशिक त्रंबकेश्वर और कोल्हापुर की महालक्ष्मी मंदिर के आंदोलन सुनती है इन सारे आंदोलनों के दौरान राज्य शासन और पुलिस प्रशासन द्वारा दोगला ब्यावर देखने को मिला जैसे हम आतंकवादी हो फिर मैंने तीन महिलाओं के साथ 20 दिसंबर को मंदिर में घुसकर चबूतरे पर चढ़ने की कोशिश की लेकिन सुरक्षाकर्मियों ने हमें बलपूर्वक बाहर कर दिया

III. ब्राह्मणवाद

डॉक्टर अंबेडकर के शब्दों में ब्राह्मणवाद से मेरा आज से एक समुदाय के रूप में ब्राह्मणों की शक्ति प्रतिष्ठा और हितों से नहीं है बल्कि स्वतंत्रता समानता और भ्रातृत्व को नकारने की प्रवृत्ति से है दलितों एवं स्त्रियों के प्रति अन्याय और शोषण की समस्या का क्षेत्र बहुत व्यापक है ब्राह्मणवादी व्यवस्था एवं साहित्य में दलित समाज पर अनेक प्रकार की निर्योग्यताएं थोपी है हिंदुओं का अछूतों के प्रति बहुत बुरा व्यवहार रहा है ब्राह्मणों ने उनको धार्मिक स्वतंत्रता और कर्मकांडों से वंचित रखा उनका विश्वास था कि इनके छूने से सब कुछ अछूत हो जाता है विधि प्रबंधकों ने संगति आहार विवाह और शिक्षा की दृष्टि से शूद्रों पर अनेक प्रकार की सामाजिक पाबंदियां आरोपित कर दी इसके फलस्वरूप कई मामलों में तो उच्च वर्ग के लोगों ने आमतौर से ब्राह्मणों ने खासतौर पर शूद्रों का सामाजिक बहिष्कार किया ब्राह्मणवाद ने आज प्रश्नों के लिए अनेक सामाजिक,राजनीतिक,आर्थिक,शैक्षणिक,धार्मिक, सांस्कृतिक एवं शारीरिक निर्योग्यताएं निर्धारित की जिन्होंने दलितों को अपने विकास शिक्षा स्वतंत्रता समानता के अधिकार आदि जैसे महत्वपूर्ण तत्वों से कोसों दूर कर दिया जिसका परिणाम आज हमें उनके सामाजिक एवं आर्थिक एवं शैक्षणिक रूप में दिखाई देता है कि वह कितने पिछड़े हुए हैं और इन नीति योग्यताओं का समाज में इस प्रकार से पालन कराया गया की निम्न वर्ग समाज के हर क्षेत्र में पिछड़ा बना रहे और पालन ही नहीं कराया उन पर जबरदस्ती लागू किया गया और यदि वह इसे मानने से मना करते तो उन पर अत्याचार किया जाता था जो कि उनकी मानसिक दशा बन गई है

IV. वर्चस्व का दम्भ

गांव का हर सवर्ण अपने आप को अस्पृश्य से श्रेष्ठ मानता है वह अपने आप को उनका मालिक समझता है और इसलिए वह उनकी इज्जत को बनाए रखना बहुत जरूरी समझते हैं और उनसे ऐसा काम करते हैं जो उनकी मान मर्यादा के खिलाफ हो और वह मना करते हैं तो उन पर जातिगत अत्याचार करते हैं और उन्हें काम के लिए कुछ भी पारिश्रमिक देने नहीं की आवश्यकता होती है क्योंकि ऐसी ही सामाजिक व्यवस्था बना दी गई है और यदि में काम करने से मना करते हैं तो तो उन पर और अत्याचार किया जाता है अतः इस कारण उनके कामों को करने से इनकार नहीं कर सके उन्हें हर तरह से इतना दिन हीन बना दिया गया कि सभी इन पर राज कर सकें यह किसी एक व्यक्ति या परिवार की नहीं बल्कि उनकी पूरे समाज या समुदाय की स्थिति या नियति बन चुकी है अस्पृश्य हर सवर्ण से निम्न समझा जाता है चाहे उसकी आयु कुछ भी क्यों ना हो वह कितना भी योग्य क्यों ना हो एक सवर्ण हिंदू युवक किसी भी अस्पृश्य श्रेष्ठ समझा जाता है चाहे वह निम्न वर्ग का व्यक्ति कितना भी पढ़ा लिखा हो आज भी सवर्ण से ही हीन समझा जाता है जिसके लिए काला अक्षर भैंस बराबर हो वर्चस्व का दम आज जनमानस पर इस कदर हावी है कि दलितों को हीनता या हिंदू मानते हैं एवं जब कभी भी उनके द्वारा बनाई गई निर्योग्यता ओं की सीमा पर पहुंचने की चेष्टा करते हैं तो उसका परिणाम हमें समाचार पत्रों पत्रिकाओं एवं समाचार चैनलों के द्वारा दलित शोषण के रूप में पढ़ने अब देखने को मिलता है आज भी ब्राह्मणवादी मानसिकता अस्पृश्य को अपनी बराबरी पर देखना पसंद नहीं करती

International Journal for Research in Applied Science & Engineering Technology (IJRASET)
ISSN: 2321-9653; IC Value: 45.98; SJ Impact Factor: 7.538
Volume 12 Issue III Mar 2024- Available at www.ijraset.com

V. अंधविश्वास

अब प्रश्नों को शिक्षा से वंचित कर उन अंधविश्वास में ढकेल आ गया जिस कारण उन्हें अपने बारे में सोचने का मौका ही नहीं मिला शिक्षा जो मनुष्य को अच्छे बुरे का ज्ञान कराती है नैतिक अनैतिक बात को समझने में महत्व प्रदान करती है चिंतन मनन करने की क्षमता विकसित करती है एक शब्द में मनुष्य एवं समाज का निर्माण करती है ब्राह्मण वादियों ने अस्पृश्य जनता को शिक्षा से वंचित कर बहुसंख्यक जनता एवं देश को बरसो या पीढ़ियों पीछे बना कर रख दिया है समाज में जाति व्यवस्था की जड़ें आडंबर और अंधविश्वास पर आधारित हैं अंधविश्वास और आडंबर ओं की सहायता से ही ऐसी स्थिति निर्मित हुई जिसमें अस्थियों को सामाजिक आर्थिक अधिकारों और आत्मविश्वास के अवसरों से वंचित किया जा सके जाति व्यवस्था से समाज में विभिन्न संस्कारों का उत्पत्ति हुई और अस्वाभाविक घटना घटित हुई जो सामाजिक प्रगति की राह में बहुत बड़े-बड़े हैं भाग्यवादी का अकर्मण्यता खुद जन्म देती है अकर्मण्यता आर्थिक प्रगति को अवरोध करती है जिस कारण इन जातियों का आर्थिक विकास नहीं हो सका

VI. राजनीति

राजनीति में आज जातिवाद भाई भतीजावाद वंशवाद समाजवाद परिवारवाद आदि का बोलबाला रहा है ऐसे में राजनीतिक प्रभुत्व हीन समाज को लगातार अनदेखा किया गया और संवैधानिक प्रक्रियाओं आधी नियमों कानूनों आदि को दलितों के हित में शत-प्रतिशत लागू नहीं किया गया राजनीतिक दल दलितों को एकमात्र वोट बैंक के रूप में इस्तेमाल करते हैं एवं चुनाव जीतकर अपने चुनावी घोषणा पत्रों को भूलकर दलित विरोधी गतिविधियों में संलग्न हो जाते हैं वर्तमान समय में आरक्षण की समीक्षा यह समाप्ति की बातें की जा रही हैं जो देश एवं दलित आदिवासियों पिछड़ों के लिए घातक सिद्ध होगा सरकार और विधायिका में इतने वर्षों तक शामिल होने के बावजूद दलितों की स्वतंत्र राजनीतिक अस्मिता नहीं बन पाई क्योंकि इस व्यवस्था के चलते सवर्ण वर्चस्व वाली राजनीतिक पार्टियों ने उनको शक्ति प्रदान करने के बजाय उनका उपयोग अपनी शक्ति बढ़ाने के लिए ही किया है यह विडंबना है कि आरक्षित सांसद या विधायक किसी भी बड़े से बड़े दलित या आदिवासी मुद्दे पर एक राय नहीं हो पाते जो प्रतिनिधित्व आरक्षित वर्गों का करते हैं किंतु अपने व्यक्तिगत स्वार्थ एवं पद की लालसा और दबाव में आकर अपने कर्तव्य को भूल जाते हैं दलितों ने विदेश में अनेक राजनीतिक दलों का निर्माण किया पर आस्थावान यह है कि शायद देश को दलित प्रधानमंत्री देकर भारतीय संविधान की समस्त दलित आदिवासी हितेषी प्रस्तावों को लागू करवा कर उन समाजों का उद्धार कर सकें सामाजिक समरसता भंग होने पर ब्लॉक करने के बजाय प्रबुद्ध सवर्ण को शताब्दियों से दलितों पर अपने द्वारा किए गए अत्याचारों को ध्यान कर सच्चा भाईचारा स्थापित करने का प्रयास करना चाहिए और ऊंच-नीच की भावना अब किसी एक वर्ग नहीं वरन पूरे राष्ट्र की प्रगति में बाधक बन रही है

VII. क्षेत्रवाद

देश की सामाजिक समरसता एवं राष्ट्रीय एकता के लिए एक और खतरा है जिसे हम क्षेत्रवाद कहते हैं क्षेत्रवाद की भावना ने ही देश का विभाजन किया और मनुष्यों को एक दूसरे से दूर किया इसी भावना के कारण विभिन्न क्षेत्रों में रहने वाले लोग अपने अपने आप को सिर्फ साबित करने के लिए एक दूसरे पर आरोप लगाते रहते हैं इस क्षेत्रवाद के कारण ही समाज में एकता का बीज नहीं बना पा रहा है क्योंकि एक ही धर्म या एक ही जाति के होने के बावजूद भी लोग अपने क्षेत्र की महत्वता को सिद्ध करने के लिए अपने आप को श्रेष्ठ समझते और अन्य क्षेत्र के लोगों को अपने आप से निम्न समझते हैं जो कि सामाजिक समरसता के लिए घातक है जिसका जीता जागता उदाहरण हम वर्तमान में मणिपुर समस्या के रूप में देख सकते हैं किस प्रकार भारतीय समाज के दो समुदाय क्षेत्र के विवाद के रूप में आपस में लड़ रहे हैं और केवल मणिपुर ही नहीं कश्मीर समस्या किसको याद नहीं है जिसमें क्षेत्रवाद के आधार पर लोगों को पलायन करना पड़ा और यह दो उदाहरण ही पूर्ण नहीं है ऐसे हम कई उदाहरणों को देख सकते हैं

VIII. सांप्रदायिकता

एक समुदाय या धर्म के लोगों द्वारा अन्य समुदाय धर्म के विरुद्ध किया गया शत्रु भाव ही सांप्रदायिकता कहा जाता है यह शत्रु भाव एक विशेष समुदाय को गलत दोषारोपण हानि पहुंचाने और जान पूछ कर अपमानित करने की हद तक चला जाता है तथा लूटपाट मकानों और दुकानों में आगजनी तथा कमजोर को सताना स्त्रियों को अपमानित करना तथा लोगों की हत्या तक की जाती है संप्रदायिकता व्यसन की मानसिकता है जो धर्म एवं संप्रदाय के लोगों में आर्थिक एवं राजनीतिक स्वार्थों की पूर्ति के लिए दिखाई देती है इसके परिणाम स्वरूप विभिन्न धार्मिक समूह में तनाव एवं संघर्ष पैदा होता है रमन हाउस डिक्शनरी के अनुसार सांप्रदायिकता अपने ही जातीय समूह के प्रति तीव्र निष्ठा की भावना है स्मिथ के अनुसार एक सांप्रदायिक व्यक्ति अथवा समूह है जो अपने धार्मिक व भाषा भाषी समूह को एक ऐसी पृथक राजनीतिक तथा सामाजिक इकाई के रूप में देखता है जिसके हित अन्य समूहों से पृथक होते हैं और जो अक्सर उनके विरोधी भी हो सकते हैं सांप्रदायिक व्यक्ति होते हैं जो धर्म के माध्यम से राजनीति करते हैं इस प्रकार सांप्रदायिक वह है नहीं है जो धार्मिक व्यक्ति है बल्कि वह है जो धर्म के माध्यम से राजनीति करता है सांप्रदायिकता के कारण एक ही धर्म में विभिन्न गुट बन गए हैं

और अन्य धर्म के लोगों के साथ तो शत्रु पूर्ण व्यवहार बनता जा रहा है जिससे कि समाज में दूरियां बन रही है और सामाजिक समरसता का माहौल बिगड़ रहा है यदि हमें समाज में सामाजिक समरसता का माहौल तैयार करना है तो हमें सौहार्द पूर्ण एवं मिलजुल कर रहने की आवश्यकता होगी तभी हम अपने समाज और अपने देश की उन्नति में भाग ले सकते हैं और इसके लिए हमें दूसरे धर्म के को सम्मान और आदर पूर्वक महत्व देना जरूरी है

IX. अशिक्षा

शिक्षा एक ऐसा प्यार है जिसके द्वारा मनुष्य का सर्वांगीण विकास होता है और उसमें नैतिक गुणों का विकास भी होता है परंतु यह शिक्षा उद्देश्य पूर्ण और मानवता रूपी होनी चाहिए जिससे कि एक अच्छे समाज का निर्माण किया जा सके परंतु आज शैक्षणिक संस्थानों मैं भी शिक्षा को केवल व्यवसायिक मानकर काम किया जा रहा है जिस वजह से हमें समाज में मानवतावादी गुणों को खोने वाले लोग ही मिल रहे हैं यदि शिक्षा का अच्छी तरह से उपयोग किया जाए और शिक्षित व्यक्ति को समाज में संलग्न किया जाए तो सामाजिक समरसता को बढ़ाया जा सकता है परंतु इसके विपरीत आज हमारे सामाजिक व्यवस्था में शिक्षा को धर्म से जोड़कर और जटिल बना दिया गया है जो कि मानव समाज के विकास के लिए एक अवरोध का काम करेगी क्योंकि ऐसा कई समाज विदों का मानना है

इस प्रकार समाज के समावेशी विकास की प्राथमिकता स्पष्ट है अनुसूचित जाति,अनुसूचित जनजाति अन्य पिछड़ा वर्ग,अल्पसंख्यकों, महिलाओं तथा बच्चों के उत्थान कार्यक्रमों के साथ-साथ हमें समाज के उन निम्न तपको के लिए अधोसंरचना में महत्वपूर्ण बदलाव करना होगा और इनके लिए बनाई योजनाओं को शक्ति के साथ लागू करना होगा सरकार को ऐसी योजनाएं बनानी होगी जिससे समाज में सभी लोगों के साथ सामाजिक समानता का व्यवहार हो और समाज में समरसता स्थापित हो तभी हम मानवता के इस पूर्ण रूप को प्राप्त कर सकते हैं जिसे हम मानवतावादी दृष्टिकोण कहते हैं

संदर्भ ग्रंथ सूची

[1] देसाई ए आर भारतीय राष्ट्रवाद की सामाजिक पृष्ठभूमि मैकमिलन इंडिया लिमिटेड अंसारी रोड दरियागंज नई दिल्ली 1996 पृष्ठ 196
[2] अंबेडकर संदकीर 1981 पृष्ठ 270 3 कुमार डॉ विवेक दलित समाज पुरानी समस्याएं नई आकांक्षाएं सम्यक प्रकाशन क्लब रोड पश्चिम पुरी नई दिल्ली 2007 पृष्ठ 30 4
[3] लिंबा दे शरण कुमार मनुष्य के मन में बैठा मनु दैनिक भास्कर रसरंग ग्वालियर 28 दिसंबर 2014 पृष्ठ 2
[4] मीडिया मध्य प्रदेश के हजारों गांव में अभी भी मंदिर पानी में छुआछूत दैनिक भास्कर ग्वालियर 12 अक्टूबर 2016 पृष्ठ 1
[5] आहूजा राम भारतीय सामाजिक व्यवस्था रावत पब्लिकेशन जयपुर एवं नई दिल्ली 1999 पृष्ठ संख्या 92
[6] देसाई तिरुपति अध्यक्ष भू माता ब्रिगेड बराबरी से बड़ा हो कोई बदलाव संभव नहीं दैनिक भास्कर ग्वालियर 15 अप्रैल 2016 पृष्ठ संख्या
[7] महाजन डॉक्टर बी डी मध्यकालीन भारत पृष्ठ 352 नो शर्मा रामशरण शूद्रों का प्राचीन इतिहास 1997 पृष्ठ संख्या 108

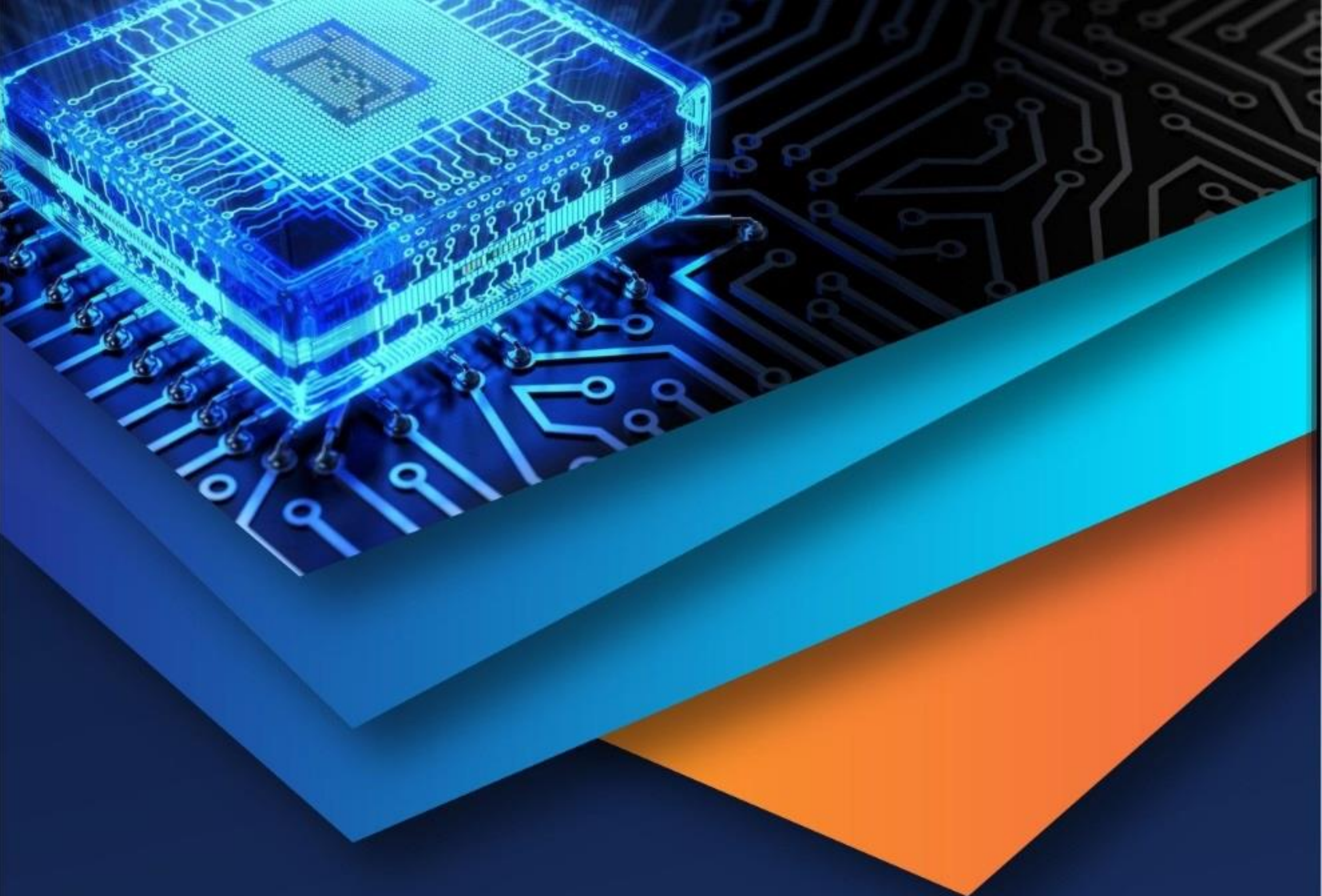

10.22214/IJRASET

INDEX COPERNICUS 45.98

IMPACT FACTOR: 7.129

IMPACT FACTOR: 7.429

INTERNATIONAL JOURNAL FOR RESEARCH

IN APPLIED SCIENCE & ENGINEERING TECHNOLOGY

Call : 08813907089 (24*7 Support on Whatsapp)